an>

Title: Need to conduct survey and provide compensation to farmers of Uttarakhand who lost their crops due to heavy rainfall and hailstorm.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): उपाध्यक्ष महोदय, उत्तराखंड में वर्ष 2013 में भीषण त्रासदी आयी थी, अभी किसान उससे संभल भी नहीं पाये थे कि गत समय में भारी ओला वृष्टि और अति वृष्टि से बर्बादी हुई है, विशेष रूप से हरिद्वार जनपद के किसान बर्बाद हो गये हैं। गांवों के खेत-खलिहान रेत में तब्दील हो गये हैं और बचे हुए किसान भी इस दैवी आपदा का शिकार हो गये हैं। अभी तक उत्तराखंड कांग्रेस की सरकार ने उसका सर्वे नहीं करवाया है। बर्बाद हुए किसानों को कोई राहत राशि नहीं मिली है, जबकि प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि जिनकी 33 प्रतिशत फसल का नुकसान हुआ है, उनकी नुकसान की भरपाई होगी, उनको डेढ़ गुना राहत राशि दी जायेगी लेकिन अभी तक न तो उसका व्यापक सर्वे हुआ है और न उन्हें कोई राहत राशि दी गयी है। इसी का परिणाम है कि उत्तराखंड की संवेदनहीन सरकार से परेशान हो कर हरिद्वार के किसानों ने अपनी लहलहाती फसलों के बर्बाद होने पर उन्हें आग के हवाल कर दी। गांव के लोगों ने उन फसलों को आग में जला दिया। इतना ही नहीं, कलियर क्षेत्र में मेवड़ गांव के एक किसान ने दो दिन पहले अपने ही खेत में पेड़ से लटककर आत्महत्या कर ली। जिन लोगों का नुकसान हुआ और आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के प्रभावित परिवार को पूरी तरह सहायता दी जाए, तत्काल सर्वे कराया जाए, राहत राशि दी जाए, किसानों के ऋण माफ किए जाएं, तत्काल प्रभाव से वसूली रोकी जाए और जिन किसानों के खेत-खलिहान पूरी तरह से नदी में समाहित हो गए, उनके लिए अलग से राहत पैकेज दिया जाए, उनके परिवार के एक सदस्य को राजकीय सेवा में लिया जाए। किसान के खेत जो रेत में तब्दील हुए हैं, उस रेत को उठाने का काम उसी को दिया जाए। खनन माफियाओं को भी उसके सिर पर बिठा दिया गया है, यह ठीक नहीं है। गन्ना किसानों का दो-दो वर्ष से भुगतान नहीं हुआ है। वे अपनी बेटी की शादी नहीं कर पा रहे हैं, बच्चों को पढ़ा नहीं पा रहे हैं। जो गन्ने का भुगतान बचा हुआ है, उसे ब्याज राशि सहित तत्काल समय में उत्तराखंड सरकार किसानों को उपलब्ध कराए। मैं आपका आभार प्रकट करता हूं।